AstroSage

World's No. 1 Astrology Portal & App

शनि रिपोर्ट

शनि रिपोर्ट

प्रिय Pooja Sharma

एस्ट्रोसेज डॉट कॉम की सेवाएं चुनने के लिए आपका धन्यवाद

शनि ग्रह से संबंधित यह रिपोर्ट एक कुंडली आधारित व्यक्तिगत रिपोर्ट है। इस रिपोर्ट में हमने यह जानकारी देने का प्रयास किया है कि शनि ग्रह का आपके जीवन पर क्या असर होगा। इनमें प्रमुख रूप से नौकरी, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मामलों पर शनि का क्या प्रभाव होगा। इसके अलावा शनि की साढ़े साती, पनौती, शनि का गोचर और शनि की महादशा जीवन के किस वर्ष में आपको प्रभावित करेगी और इन से बचने के लिए किये जाने वाले उपाय कौन–कौन से हैं।

शनि ग्रह का पौराणिक महत्व

शनिदेव को सूर्य देव और छाया का पुत्र माना जाता है। वैदिक मान्यताओं के अनुसार सूर्य देव का विवाह देव विश्वकर्मा की पुत्री संज्ञा से संपन्न हुआ और कुछ समय अंतराल पर यम तथा यमि का जन्म हुआ। परंतु सूर्य देव का तेज इतना अधिक था कि देवी संज्ञा उनके ताप को सहन कर पाने में असमर्थ हो रही थी। इसी कारण अपना एक प्रतिरूप देवी छाया के रूप में छोड़कर स्वयं तपस्या करने वनों में चली गई जिससे कि वह सूर्य के तेज को सहन कर पाने में सक्षम होने की शक्ति पा सके। कुछ समय अंतराल पर देवी छाया से सूर्य देव को शनि देव की प्राप्ति हुई। शनिदेव का रूप देखकर सूर्य देव ने उन्हें अपनाने से इंकार कर दिया और शनिदेव की माता छाया को अपशब्द कहे जिस कारण शनिदेव ने रुष्ट होकर स्वयं के पिता पर ही ग्रहण लगा दिया। त्रिदेवों ने मिलकर शनिदेव को कर्म का अधिष्ठाता अर्थात कर्म फल दाता शनि का पद प्रदान किया ताकि वे संपूर्ण चराचर जगत के प्राणियों को उनके कर्मानुसार अच्छा एवं बुरा फल प्रदान कर सके। एक बार दशानन रावण ने ऐसे पुत्र की कामना की जो अमर हो सके और जिसे कोई पराजित ना कर सके इस हेतु रावण ने अपने तेज एवं विद्या से समस्त ग्रहों को कुंडली के ग्यारहवें भाव में बंधक बनाकर रख दिया। यदि रावण का यह स्वप्न पूर्ण हो जाता तो उसके पुत्र मेघनाथ को मार पाना किसी के लिए भी संभव नहीं होता। शनिदेव ने स्वयं का एक पैर कुंडली के बारहवें भाव में रख दिया ताकि इस घटना को होने से रोका जा सके। जब रावण को यह ज्ञात हुआ तो अत्यंत क्रोधित होकर उसने शनिदेव की टांग पर प्रहार किया। ऐसा माना जाता है कि तभी से शनिदेव धीरे धीरे चलने लगे। और कर्मफल दाता होने के साथ–साथ परम दंडाधिकारी भी बन गए।

जीवन में शनि का महत्व

शनि ग्रह एक राशि में लगभग ढाई वर्ष तक रहता है और जन्म कुंडली में सभी ग्रहों में सबसे अधिक समय तक एक राशि में रहने वाला ग्रह शनि ही है। शनि मकर तथा कुंभ राशियों का स्वामी ग्रह है तथा तुला राशि में 20 डिग्री पर पूर्ण उच्च तथा मेष राशि में 20 डिग्री पर पूर्ण नीच माना जाता है। शनि की मूल त्रिकोण राशि कुंभ मानी जाती है। शनि जिस भाव में स्थित होता है। उस भाव से तृतीय, सप्तम तथा दशम

भाव पर पूर्ण दृष्टि डालता है। इसी कारण इसी कारण मानव जीवन में शनि का अत्यधिक महत्व माना गया है।

नव ग्रहों में शनि को सेवक की संज्ञा दी गई है और कर्म का कारक ग्रह कहा गया है और इसी कारण यह आपकी कुंडली में कार्य क्षेत्र का मुख्य कारक ग्रह माना जाता है। शनि के प्रभाव से व्यक्ति कर्म द्वारा अपने जीवन में उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता है। शनि सदैव खराब या अशुभ फल देने वाला नहीं होता है। अगर आपकी कुंडली में शनि योग कारक ग्रह बनकर अच्छी स्थिति में है तो यह आपको और रंक से राजा बनाने की क्षमता रखता है और जीवन पथ पर आगे बढ़ाता है। चूंकि शनि कर्म प्रधान ग्रह है इस कारण यह व्यक्ति को मेहनत करने के लिए उत्साहित करता है। जन्म कुंडली में शनि की शुभ स्थिति से व्यक्ति आशावादी रहता है और ऐसा व्यक्ति किसी भी चुनौती का डटकर सामना करने से पीछे नहीं हटता क्योंकि अच्छा शनि व्यक्ति को कर्म निष्ठ बनाता है।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार जन्म कुंडली में शनि ग्रह प्रत्येक व्यक्ति को कर्म करने की ओर प्रेरित करता है। जन्म कुंडली में नीच, वक्री अथवा कमजोर शनि व्यक्ति व्यवसायी व्यवसायी भी बना सकता है। शनि से संबंधित जातक जीवन में धीरे–धीरे उन्नति करते हैं परंतु उनकी उन्नति लंबे समय तक चलने वाली होती है। शनि से संबंधित व्यक्ति अपने शहर चरण तथा सेवकों आदि के द्वारा काम करवाने में माहिर होते हैं। शनि हर व्यक्ति की जन्म कुंडली में शनि ग्रह की दशा अथवा महादशा अत्यंत महत्वपूर्ण परिणाम देने में सक्षम होती है।

आपकी जन्म कुंडली की रूपरेखा

आपका जन्म मेष राशि के अंतर्गत ारणी नक्षत्र में हुआ है तथा आपके जन्म के समय वृषा लग्न उदित हुआ है। आपके जीवन में शनि की महादशा 25/ 1/2051 से 25/ 1/2070 के बीच अपना प्रभाव दिखाएगी।

आपका जन्म विवरण

- **दिनांकः** 23 : 8 : 1978
- **समयः** 23 : 53 : 18
- **जन्म स्थानः** Delhi
- **टाइम जोनः** 5.5
- **अक्षांशः** 28 : 40 : N
- **रेखांशः** 77 : 13 : E

लग्न चक्र

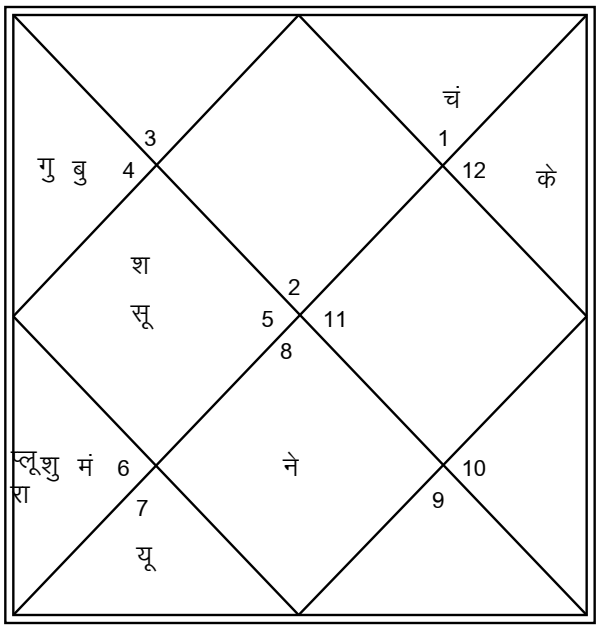

नवमांश चक्र

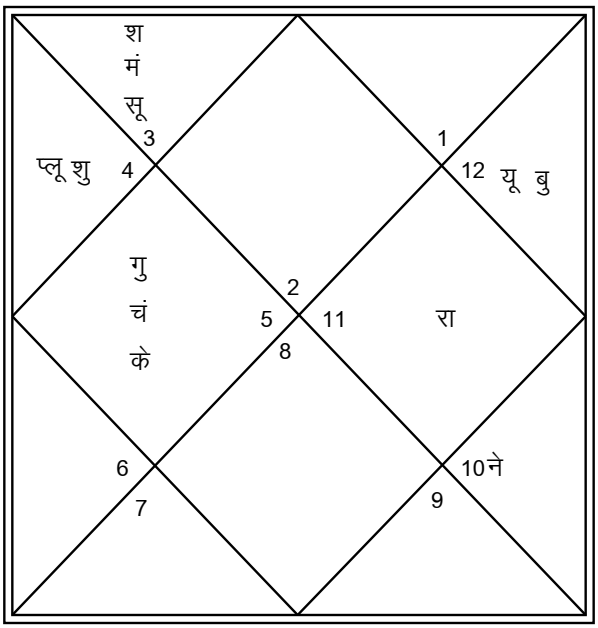

जन्म कुंडली में शनि की स्थिति

शनि विचार

आपकी कुण्डली में शनि सिंह राशि में स्थित है, जो कि शनि की शत्रु राशि है। शनि नौवें, दसवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में चौथे घर में स्थित है। शनि की दृष्टि छठे, दसवें, पहले घर पर है।
यहां सथित शनि आपको उदार और शांत बनाता है। आप गंभीर धर्य सम्पन्न और लोभरहित व्यक्ति हैं। आप व्यसनहीन, न्यायप्रिय और अतिथियों का सत्कार करने वाले व्यक्ति हैं। आप परोपकार करने में खूब विश्वास रखते हैं। आप गुणवान व्यक्ति हैं। आप प्रचुर मात्रा मं धन प्राप्त करेंगे। आपके पास विभिन्न प्रकार के वाहन होंगे। आपको किसी और की सम्पत्ति भी मिल सकती है।

आप दूर देश में रहकर खूब तरक्की कर सकते हैं। आपके लिए आपकी उम्र सोलहवां, बाइसवां, चौबीसवां, सत्ताइसवां और छत्तीसवां साल भाग्यकारी रहेगा। इन वर्षों में आपको नौकरी, विवाह, सन्तति आदि शुभफल मिल सकते हैं। हांलाकि यहां सथित शनि छ्त्तीस साल की उम्र तक कभीकभी कष्ट भी देता रहता है। इसके बाद उम्र के छप्पनवें वर्ष तक सुख मिलता रहता है।

आपको शत्रुओं के माध्यम से भी लाभ मिल सकता है। यहां सथित शनि के दुष्प्रभाव के प में आपको शारीरिक प से कम सुख मिल सकता है। आपकी संगति खराब लोगों के साथ हो सकती है। मानसिक चिंता या कष्ट रह सकता है। माता को बीचबीच में कष्ट रह सकता है। शनि की यह स्थिति कभीकभी दो विवाह या घरेलू क्लेश की स्थिति भी उत्पन्न करती है। कभीकभी यह स्थिति पिता की सम्पत्ति से वंचित भी करती है।

नौकरी एवं व्यवसाय

चौथे भाव में शनि की स्थिति आपको जन्म स्थान से दूर नौकरी अथवा व्यवसाय करने की ओर प्रेरित करती है। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती है। ऐसा संभव है कि आपको किसी व्यक्ति के अधीन कार्य करना पड़े अर्थात मुख्य रूप से संभव है कि आप नौकरी पेशे को अपनाएं। यहां सथित शनि आपके मन पर प्रभाव डालता है जिसके कारण कई बार आप मानसिक रुप से व्याकुलता का अनुभव करते हैं जिसका प्रभाव आपके कार्यक्षेत्र पर भी पड़ता है।

आर्थिक स्थिति

आर्थिक स्थिति के लिहाज से शनि की यह स्थिति ज्यादा अनुकूल नहीं है। जहां एक और के शनि आपको मानसिक तनाव दे सकता है तो वहीं दूसरी ओर आपको व्यर्थ के वाद–विवाद में भी उलझा सकता है। जिसके परिणामस्वरुप आप को आर्थिक रुप से कुछ हानि का सामना भी करना पड़ सकता है। परिवार के लोगों का स्वास्थ्य कमजोर रहने के कारण आप उन पर भी खर्चा करेंगे जिस कारण आपकी आर्थिक स्थिति

कुछ कमजोर रह सकती हैं।

शिक्षा

शिक्षा के क्षेत्र में यह शनि कुछ व्यवधानों की ओर इंगित करता है। परंतु दूसरी और यह संभव है कि आप शिक्षा हेतु विदेश गमन करें अथवा घर से दूर रहकर पढ़ाई करें। यदि आप इतिहास अथवा तकनीकी शिक्षा ले रहे हैं तो शनि आपकी पूरी मदद करेगा। परंतु दूसरी और यह शनि आपके मन में भटकाव लाता है जिसके कारण आप पूर्ण रुप से अपनी पढ़ाई पर फोकस कर पाने में असमर्थ रहते हैं।

वैवाहिक जीवन

वैवाहिक जीवन के लिए यह शनि बहुत अच्छा नहीं है। चतुर्थ भाव आपका सुख भाव हैं यहां स्थित शनि आपके सुख में कमी करता है जिस कारण आप पूर्ण रुप से दांपत्य जीवन का आनंद उठा पाने में असमर्थ हो जाते हैं। या तो यह आपको परिवार से दूर रखता है अथवा आपको अपने कार्य में इतना व्यस्त बना देता है कि आप परिवार को कम समय दे पाते हैं। वहीं दूसरी और यदि आपका जीवनसाथी कार्यरत हैं तो उन्हें भी अधिक परेशान करना पड़ता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से शनि की स्थिति कुछ प्रतिकूलता लिए हुए होती है। यहां स्थित शनि जहां एक और आपके माता पिता को शारीरिक कष्ट दे सकता है वहीं दूसरी ओर आपको बीच शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। मानसिक अस्थिरता, हृदय अथवा वक्त से संबंधित परेशानियां आपको गिर सकती हैं इसलिए अपनी सेहत का ध्यान रखें और विशेष रूप से श्वास संबंधित योग करते रहे।

वर्तमान समय में गोचर शनि की स्थिति एवं उसका आपके जीवन पर प्रभाव

चंद्र राशि से शनि धनुराशि में आपके नौवें भाव में स्थित हैः

इस अवधि के दौरान आप खूब खुश रहेंगे। आपके प्रयास अच्छे परिणाम देना शुरू कर देंगे। सरकारी अफसरों, वरिष्ठ लोगों एवं माता पिता से संबंध अति मधुर रहेंगे। एक लम्बी यात्रा बहुत फायदेमंद रहेगी। आपके मित्र व सहयोगी आपकी पूरी सहायता करेंगे। आपका मन अध्यात्म और जीवन के उच्च दर्शन की ओर मुड़ जाएगा। नए व्यापार करने या नौकरी बदलने की पूरी संभावना है। विरोधी आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाएगें। छोटी मोटी बीमारियां लगी रहेंगी।

शनि की साढ़ेसाती एवं उसका फल

जब कुंडली में जन्म राशि अर्थात चंद्र राशि से बारहवें स्थान पर शनि का गोचर प्रारंभ होता है तो इसी समय से जीवन में साढ़ेसाती का आरंभ होता है। जब शनि का गोचर जन्म राशि अर्थात जन्म–कालीन चंद्रमा पर होता है तो यह साढ़ेसाती का मध्य भाग माना जाता है और जब शनि जन्म राशि से द्वितीय भाव में प्रवेश करता है तब से साढ़ेसाती का अंतिम भाग प्रारंभ माना जाता है। क्योंकि शनि एक राशि में ढाई वर्ष तक स्थित रहता है इसलिए 3 भावों को कुल मिलाकर 7.5 वर्षों के समय अंतराल में पूर्ण करता है इसी कारण शनि के इस विशेष गोचर को साढ़ेसाती कहा जाता है। क्योंकि शनि पूरे भचक्र का चक्कर 30 वर्षों में लगाता है इसलिए 30 वर्षों के उपरांत उन्हें उसी राशि में आ जाता है।

यही कारण है कि प्रत्येक मानव के जीवन में सामान्यता तीन बार साढ़ेसाती आती है। जीवन में शनि की साढ़ेसाती अत्यंत ही महत्वपूर्ण प्रभाव देती है। अक्सर देखा गया है कि लोगों के मन में शनि की साढ़ेसाती को लेकर अनेक भ्रांतियां मौजूद हैं जैसे कि शनि की साढ़ेसाती में व्यक्ति को अत्यधिक कष्टों का सामना करना पड़ता है और विभिन्न प्रकार की पीड़ा का अनुभव होता है। जबकि ऐसा देखा गया है कि शनि की साढ़ेसाती जीवन में आगे बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करती है और व्यक्ति को उसके कमजोर पहलुओं को मजबूत बनाने की ओर आगे बढ़ाती है। यदि व्यक्ति इस समय अंतराल में अपनी गलतियों को समझ कर आगे बढ़ता है और अपने कर्मों की दिशा को सही और ले जाता है तो शनि की साढ़ेसाती व्यक्ति को ऊँचाइयों पर ले जाने में पूरा योगदान करती है। जैसा कि पहले भी कहा है कि शनि कर्म का निर्धारण करते हैं अतः साढ़ेसाती का समय उन कर्मों के फलों को भुगतना का समय होता है।

आपके जीवन में आने वाली साढ़ेसाती का विवरण निम्न प्रकार वर्णित है:

प्रथम साढ़ेसाती

उदय चरणः जून 02, 1995 से अगस्त 09, 1995

उदय चरणः फरवरी 17, 1996 से अप्रैल 17, 1998

शिखर चरणः अप्रैल 18, 1998 से जून 06, 2000

अस्त चरणः जून 07, 2000 से जुलाई 22, 2002

अस्त चरणः जनवरी 09, 2003 से अप्रैल 07, 2003

द्वितीय साढ़ेसाती

उदय चरणः मार्च 30, 2025 से जून 02, 2027

शिखर चरणः जून 03, 2027 से अक्टूबर 19, 2027

उदय चरणः अक्टूबर 20, 2027 से फरवरी 23, 2028

शिखर चरणः फरवरी 24, 2028 से अगस्त 07, 2029

अस्त चरणः अगस्त 08, 2029 से अक्टूबर 05, 2029

शिखर चरणः अक्टूबर 06, 2029 से अप्रैल 16, 2030

अस्त चरणः अप्रैल 17, 2030 से मई 30, 2032

तृतीय साढ़ेसाती

उदय चरणः मई 15, 2054 से सितम्बर 01, 2054

उदय चरणः फरवरी 06, 2055 से अप्रैल 06, 2057

प्रथम साढ़ेसाती

प्रथम शनि साढ़े साती के उदय चरण का फल

जून 02, 1995 से अगस्त 09, 1995
फरवरी 17, 1996 से अप्रैल 17, 1998

यह शनि साढ़े साती का आरम्भिक दौर है। इस दौरान शनि चन्द्र से बारहवें भाव में स्थित होगा। इस दौरान आपको शारीरिक परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि आप अपने खान–पान पर विशेष ध्यान दें और पर्याप्त नींद लें अन्यथा प्रतिकूल प्रभाव के कारण आप को अस्पताल में भर्ती भी होना पड़ सकता है। संभवतः इस समय अंतराल में आपको अपने परिवार से दूर जाना पड़ सकता है। यदि कुंडली में अन्य ग्रह सहयोग करें तो इस समय के दौरान आप विदेश गमन कर सकते हैं। आपके माता पिता और परिवार के वृद्धजनों को भी आपका ध्यान रखने हेतु सजग रहना होगा। इस दौरान आप की शिक्षा में कुछ व्यवधान उत्पन हो सकते हैं अथवा ऐसा संभव है कि आपका पढ़ाई में मन ना लगे। यदि आप कॉलेज में पढ़ते हैं तो आपके लिए आवश्यक होगा कि पढ़ाई में भरपूर मन लगाएं। इस समय अंतराल में प्रेम संबंधों में भी तनाव तथा अलगाव की स्थिति उत्पन्न ना हो सकती है।

प्रथम शनि साढ़े साती के शिखर चरण का फल

अप्रैल 18, 1998 से जून 06, 2000

यह शनि साढ़े साती का चरम है। इस दौरान शनि आपकी चंद्र राशि पर गोचर करेगा अर्थात शनि का पूर्ण प्रभाव आपके चंद्रमा अर्थात मन पर होगा। आप एकांकी रहना पसंद करेंगे और अत्यधिक सोचेंगे। इसका प्रभाव आपको पेट संबंधित शिकायतों, गैस, अपच, मानसिक अशांति अथवा चिड़चिड़ेपन के रूप में दिखाई दे सकता है। शनि चंद्र को शत्रु मानता है और जहां एक और चंद्रमा चंचल है बहुत तेजी से गति करता है वही शनि गंभीर है और लंबे समय तक एक ही राशि में स्थायित्व के साथ निवास करता है। इस कारण इस समय में आपके जीवन में ऊहापोह की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। आप एक से अधिक कार्य को करना चाहेंगे लेकिन कार्य रूप में परिणित कर पाने में असमर्थ होंगे। इस समय आवश्यक होगा कि आप अपने चरित्र की रक्षा करें तथा अपने रिश्तों में आत्मीयता बनाए रखने का प्रयास करें। अकेले ना रहें सदैव किसी ना किसी व्यक्ति के साथ रहे। मेडिटेशन करें जिससे आप की मानसिक स्थिति प्रबल हो। माता पिता का सम्मान करें।

प्रथम शनि साढ़े साती के अस्त चरण का फल

जून 07, 2000 से जुलाई 22, 2002
जनवरी 09, 2003 से अप्रैल 07, 2003

यह शनि साढ़े साती का अंतिम चरण है। इस समय शनि चन्द्र से दूसरे भाव में गोचर कर रहा होगा, जो व्यक्तिगत और वित्तीय मोर्चे पर कठिनाइयों को इंगित करता है। इस दौरान अपने खान–पान पर विशेष ध्यान दें। बासी अथवा गरिष्ठ भोजन करने से बचें। आपके खर्चों में अधिकता होने लगेगी और आप देखेंगे कि आप अपने धन को सही रूप से प्रयोग कर पाने में असमर्थ हो रहे हैं। इसके विपरीत आपको धन प्राप्ति होती रहेगी। आपके कुटुंब में किसी प्रकार की अशांति रह सकती है। आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना होगा और बिना वजह किसी से भी व्यर्थ उलझने से बचना होगा। किसी भी स्वास्थ्य समस्या को नजरअंदाज ना करें अन्यथा वह किसी बड़ी बीमारी का रूप ले सकती है। यदि आपको पॉकेट–मनी मिलती है तो आप उसे बढ़ाने के लिए प्रयास करेंगे वहीं दूसरी और यदि आप नौकरी करते हैं तो इस समय मैं

आपका प्रयास होगा कि आपकी सैलरी बढ़ जाए के लिए आप भरसक प्रयत्न करेंगे। यदि आप विद्यार्थी हैं तो पढ़ाई–लिखाई पर थोड़ा नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और अच्छे परिणाम प्राप्त करने के लिए अधिक परिश्रम की जरूरत होगी। परिणाम धीरे–धीरे और कुछ विलम्ब से प्राप्त होंगे।

प्रथम साढ़ेसाती के दौरान क्या करें

- मामा एवं बुजुर्ग लोगों का सम्मान करें।
- भरपूर नींद ले और खूब पानी पिएं।
- मेडिटेशन और ध्यान करें।

प्रथम साढ़ेसाती के दौरान क्या ना करें

- रात को दूध बिल्कुल भी न पिएँ।
- लोहा अथवा शनि संबंधित अन्य वस्तुएं शनिवार को ना खरीदें।
- निर्धन एवं असहाय व्यक्तियों को कष्ट ना दें।

द्वितीय साढ़ेसाती

द्वितीय शनि साढ़े साती के उदय चरण का फल

मार्च 30, 2025 से जून 02, 2027
अक्टूबर 20, 2027 से फरवरी 23, 2028

आपके जीवन की द्वितीय साढ़ेसाती है। हालांकि कुछ प्रभाव तो प्रथम साढ़ेसाती की भांति ही दिखेगा जैसे कि आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां का सामना करना पड़ सकता है। यदि आप नौकरी करते हैं तो आपको अधिक प्रयास करने होंगे जिनका फल आपको कुछ समय के बाद प्राप्त होगा इसलिए आपको धैर्य बनाए रखना होगा। यदि आप एक व्यवसायी हैं तो आपको विदेशी संबंधों से लाभ प्राप्त हो सकता है और इस समय में आप धन संचय कर पाने में भी समर्थ होंगे। लेकिन अत्यधिक मेहनत आपको थकान दे सकती है जिसका प्रतिकूल प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर पड़ सकता है। आपके लिए आवश्यक होगा कि आप मानसिक तनाव से दूर रहें और भरपूर नींद ले। कुछ अनचाही यात्राएं भी करनी पड़ सकती हैं। आपको अपने छुपे हुए शत्रुओं से सावधान रहना होगा। दांपत्य सुख में कुछ कमी आ सकती है अथवा संभव है कि किसी कारणवश आपका आपके जीवन साथी से मनमुटाव हो जाए अतः धैर्य से काम लें। यदि आप अपने जन्म स्थान से दूर अथवा विदेश में रहते हैं तो आपके मान सम्मान में वृद्धि होगी। नौकरी में स्थानांतरण संभव है। इसके अतिरिक्त आपके पिताजी से मतभेद अथवा उनके स्वास्थ्य में कुछ समस्या हो सकती है।

द्वितीय शनि साढ़े साती के शिखर चरण का फल

जून 03, 2027 से अक्टूबर 19, 2027
फरवरी 24, 2028 से अगस्त 07, 2029
अक्टूबर 06, 2029 से अप्रैल 16, 2030

यह समय आपके लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। हालांकि आपकी सोच में गहराई आएगी और हर बात को आप बहुत सोच समझकर किसी मुकाम तक पहुंच जाएंगे। इस दौरान आप जो भी निर्णय लेंगे वह काफी दूरदर्शी सोच के होंगे और उनके फल प्राप्त होने में भी थोड़ा समय लगेगा। आप को समझना होगा कि यह समय आपके लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस समय मैं आप जो भी कर्म करेंगे वह अत्यंत ही प्रभावी परिणाम देने वाले सिद्ध होंगे। इसके लिए आवश्यक होगा कि आप कोई भी अनैतिक कार्य ना करें अन्यथा उसके प्रति आपको कष्ट भोगना पड़ सकता है। सहकर्मियों से विवाद संभव है। आपके अंदर रिश्तों के प्रति उदासीनता आ सकती है। आप अपने भाई बहनों का ध्यान रखेंगे और उन्हें यथा–संभव सहायता प्रदान करेंगे। छोटी दूरी की यात्राएं अधिक होगी। दांपत्य जीवन में तनाव हो सकता है। आपको चाहिए कि आप अपने रिश्ते में वफादारी रखें और अपने जीवनसाथी को पूरा महत्व भी दे। आपको अपने कार्य क्षेत्र में अत्यधिक मेहनत करनी होगी। कभी–कभी ऐसा भी लग सकता है कि आप जो प्रयास कर रहे हैं वह व्यर्थ जा रहे हैं और आप उनका फल प्राप्त करने में असमर्थ हैं परंतु ऐसा नहीं है यही मेहनत आने वाले समय में आपको अच्छा फल देगी।

द्वितीय शनि साढ़े साती के अस्त चरण का फल

अगस्त 08, 2029 से अक्टूबर 05, 2029
अप्रैल 17, 2030 से मई 30, 2032

इस दौरान आपको कुछ राहत महसूस होगी और आप जीवन में आगे बढ़ेंगे। पूर्व में किए गए कार्यों का फल प्राप्त होने का समय है। आपने जो अपने कार्य क्षेत्र में कठिन मेहनत की थी उसके प्रतिफल के रूप में

आपकी आमदनी में वृद्धि संभव होगी। यदि आप कोई व्यवसाय से जुड़े हैं तो उसका विस्तार हो सकता है। परिवार को कम समय दे पाएंगे इसलिए परिजनों कि आपसे शिकायत रह सकती है। आपको माताजी के स्वास्थ्य का ध्यान देना होगा। गूढ़ रहस्यमयी चीजों तथा प्राचीन कलाकृतियों के प्रति आपके अंदर रुझान देखा जा सकेगा। जीवन के रहस्यों को जानने के प्रति आप लालायित रहेंगे। आपकी बातों में व्यंग्य रहेगा। विशेष रूप से आपको अपने कार्य क्षेत्र से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्तियों और वरिष्ठ अधिकारियों तथा बड़े भाई बहनों से अच्छे संबंध बनाए रखने का प्रयास करना होगा क्योंकि उनसे आपके संबंध बिगड़ने की संभावना रहेगी। इस समय आप अपना घर बनाने का विचार भी कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रॉपर्टी आदि खरीदने के भी योग बनेंगे। गाड़ी चलाते समय विशेष सावधानी अपेक्षित है। यदि संभव हो तो मांसाहार और मदिरापान से दूर रहकर शनि को प्रसन्न रखें।

द्वितीय साढ़ेसाती के दौरान क्या करें

- अपने अधीनस्थ कर्मचारियों अथवा नौकरों को हमेशा खुश रखें।
- वाहन सावधानी पूर्वक चलाएं।
- महिलाओं का सम्मान करें।

द्वितीय साढ़ेसाती के दौरान क्या ना करें

- शराब एवं माँस का सेवन न करें।
- अनैतिक अथवा विधि विरुद्ध कार्य न करें।
- नंगे पैर पृथ्वी पर ना चले।

तृतीय साढ़ेसाती

तृतीय शनि साढ़े साती के उदय चरण का फल

मई 15, 2054 से सितम्बर 01, 2054
फरवरी 06, 2055 से अप्रैल 06, 2057

इस दौरान आपको कुछ राहत महसूस होगी और आप जीवन में आगे बढ़ेंगे। पूर्व में किए गए कार्यों का फल प्राप्त होने का समय है। आपने जो अपने कार्य क्षेत्र में कठिन मेहनत की थी उसके प्रतिफल के रूप में आपकी आमदनी में वृद्धि संभव होगी। यदि आप कोई व्यवसाय से जुड़े हैं तो उसका विस्तार हो सकता है। परिवार को कम समय दे पाएंगे इसलिए यह आपके जीवन की तीसरी साढ़ेसाती होगी। इस दौरान आपका मन आध्यात्मिक क्रियाकलापों में अधिक लगेगा। शरीर थोड़ा कमजोर हो सकता है जिस कारण आपको डॉक्टरी चिकित्सा की आवश्यकता पड़ सकती है। धन खर्च होने से आर्थिक स्थिति पर असर पड़ेगा। इस समय आपको किसी से भी विवाद करने से बचना चाहिए। जीवन में जो कुछ भी आपने हासिल किया है उसमें संतुष्ट रहने का समय यही है अन्यथा आप के छुपे हुए शत्रु भी आपको परेशान करने का भरपूर प्रयास करेंगे। अपने पड़ोसियों से अच्छे संबंध बनाए रखना आपके लिए एक चुनौती रहेगा और वह आपके प्रत्येक कार्य में बाधा पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। घरेलू मामलों में भी आपको चुनौतियों का सामना करना पड सकता है, जिसके चलते तनाव और दबाव की स्थिति पैदा होगी। इस दौरान लम्बी दूरी की यात्राएँ फलदायी नहीं रहेंगी क्योंकि यह यात्राएं आपको धन हानि के साथ शारीरिक कष्ट भी दे सकती हैं। यदि आप कोई व्यवसाय करते हैं तो इस समय मैं व्यवसाय में कोई भी बड़ा खतरा या चुनौती न मोल लें।

इस दौरान आपको कुछ राहत महसूस होगी और आप जीवन में आगे बढ़ेंगे। पूर्व में किए गए कार्यों का फल प्राप्त होने का यह समय आपके जीवन को चुनौतीपूर्ण समय हो सकता है। मानसिक स्थिति पर इसका सीधा प्रभाव पड़ेगा। इस दौरान आपको अपने कार्यों में सफलता पाने में कठिनाई महसूस होगी जिसकी वजह से आप कुंठित हो सकते हैं। आप खुद को बंधा हुआ अनुभव करेंगे। आपकी सेहत और प्रतिरक्षा–तंत्र पर्याप्त सशक्त नहीं होंगे। क्योंकि पहला भाव स्वास्थ्य को दर्शाता है इसलिए आपको नियमित व्यायाम और अपनी सेहत का खास खयाल रखने की जरूरत है, नहीं तो आप संक्रामक रोगों की चपेट में आ सकते हैं। आप के निर्णय लेने की क्षमता अच्छी खासी प्रभावित होगी अतः आवश्यक होगा कि इस समय में कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय या तो ना लें यदि निर्णय लेना अति आवश्यक हो तो किसी विश्वास पात्र की सहायता अवश्य लें। आप अपने जीवन का एक लंबा सोपान तय कर चुके हैं अतः अब समय है कि इसके लिए जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति का धन्यवाद करें जिसमें सबसे पहला नाम आपके जीवन साथी का आता है। जीवनसाथी को कुछ शारीरिक कष्ट भी संभव है अतः इस दौरान उनका पूरा ध्यान रखें।

इस समय मैं आपके ऊपर आर्थिक दबाव बढ़ सकते हैं। आपकी संतान आपसे धन–संपत्ति की मांग कर सकती है। परिवार में कुछ गलतफहमियां जन्म ले सकती हैं। व्यय में वृद्धि होगी और आपको इसपर लगाम लगाने की अब भी जरूरत है। अचानक आर्थिक हानि अथवा चोरी की संभावना भी बनी रहेगी। आपकी सोच कुछ नकारात्मक हो सकती है। आपको उत्साह के साथ परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। आपको व्यक्तिगत और पारिवारिक तौर पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, नहीं तो बड़ी परेशानियाँ पैदा हो सकती हैं। यह समय है प्रभु भक्ति में समय लगाने का। इस समय आप जीवन में किए गए प्रत्येक कर्म को महसूस भी कर पाएंगे और उसका अपने जीवन में क्या फल पाया उसका भी आकलन आप कर पाने में सक्षम होंगे। इस समय शनि आपकी महत्वाकांक्षाओं की समाप्ति की ओर इशारा करेगा और धीरे–धीरे आप अपनी इच्छाओं का त्याग करने की और आगे बढ़ेंगे। यह आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय होगा।

तृतीय साढ़ेसाती के दौरान क्या करें

- काले रंग के वस्त्रों का प्रयोग करें।
- हल्का एवं सुपाच्य भोजन करें।
- शारीरिक व्यायाम अवश्य करें।

तृतीय साढ़ेसाती के दौरान क्या ना करें

- शनिवार को रबर, लोहा से संबंधित चीजें न खरीदें।
- किसी को धोखा ना दे।
- सदैव अच्छे कर्म करें।

शनि की पनौती

शनि की पनौती/ढैय्या/अढैय्या

जब कुंडली में शनि गोचर के दौरान आपकी चंद्र राशि से चतुर्थ भाव अथवा अष्टम भाव में प्रवेश करता है तो इसको शनि की पनौती/ ढैय्या अथवा अढैय्या कहते हैं। आपकी कुंडली में इसकी समय अवधि निम्नलिखित होगी:

शनि की पनौती: वृश्चिक: दिसम्बर 21, 1984 से मई 31, 1985

शनि की पनौती: वृश्चिक: सितम्बर 17, 1985 से दिसम्बर 16, 1987

शनि की पनौती: कर्क: सितम्बर 06, 2004 से जनवरी 13, 2005

शनि की पनौती: कर्क: मई 26, 2005 से अक्टूबर 31, 2006

शनि की पनौती: कर्क: जनवरी 11, 2007 से जुलाई 15, 2007

शनि की पनौती: वृश्चिक: नवम्बर 03, 2014 से जनवरी 26, 2017

शनि की पनौती: वृश्चिक: जून 21, 2017 से अक्टूबर 26, 2017

शनि की पनौती: कर्क: जुलाई 13, 2034 से अगस्त 27, 2036

शनि की पनौती: वृश्चिक: दिसम्बर 12, 2043 से जून 22, 2044

शनि की पनौती: वृश्चिक: अगस्त 30, 2044 से दिसम्बर 07, 2046

शनि की पनौती/ ढैय्या/अढैय्या का फल

चतुर्थ शनि का फल

- सितम्बर 06, 2004 से जनवरी 13, 2005
- मई 26, 2005 से अक्टूबर 31, 2006
- जनवरी 11, 2007 से जुलाई 15, 2007
- जुलाई 13, 2034 से अगस्त 27, 2036

चतुर्थ भाव के शनि की ढैया आपके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यहां स्थित शनि आप के सुखों का आकलन करता है और आपके कर्मों के आधार पर आप के सुखों को नियंत्रित करने की ओर ज्यादा प्रेरित करता है। इस दौरान आपका अपने परिवार से दूर जाना संभव है अर्थात स्थान परिवर्तन की प्रबल संभावना रहेगी। संघर्ष में वृद्धि होगी और प्रत्येक कार्य को करने के लिए आपको अधिक वेतन करना पड़ेगा। कार्यक्षेत्र पर आप से अधिक अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद की जाएगी जिसकी वजह से आपको अधिक पसीना बहाना पड़ेगा। आपको स्वयं के प्रति भी जागरुक रहना होगा और जीवन में चली आ रही परेशानियों का सामना करने के लिए डट कर खड़ा होना होगा। आपको श्वसन, अपच अथवा थकान से संबंधित समस्याएं

परेशान कर सकती हैं। इस दौरान यदि आपने पूर्व में प्रयास किए हैं तो आप प्रॉपर्टी खरीद पाने में सक्षम होंगे। कुल मिलाकर यह समय आपको मिश्रित परिणाम देगा।

अष्टम शनि का फल

- दिसम्बर 21, 1984 से मई 31, 1985
- सितम्बर 17, 1985 से दिसम्बर 16, 1987
- नवम्बर 03, 2014 से जनवरी 26, 2017
- जून 21, 2017 से अक्टूबर 26, 2017
- दिसम्बर 12, 2043 से जून 22, 2044
- अगस्त 30, 2044 से दिसम्बर 07, 2046

अष्टम भाव के शनि को कंटक शनि भी कहा जाता है। अष्टम भाव आयु भाव भी माना जाता है तथा जीवन में बड़े परिवर्तन लाने वाला भाव है। अतः यहां स्थित हो कर शनि आपके जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन ला सकता है। यह आपकी आध्यात्मिकता को भी पड़ेगा और आपके जीवन में अचानक से होने वाले घटनाक्रम को प्रभावित करेगा। इस समय मैं आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने की सबसे अधिक आवश्यकता होगी क्योंकि जरा सी लापरवाही किसी भी बड़ी बीमारी को जन्म देने में सक्षम होगी। दौरान कार्यक्षेत्र पर आपको अपनी मेहनत का फल प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना होगा। कार्य क्षेत्र में परिवर्तन अथवा पदच्युति की संभावना भी हो सकती है। इसलिए आपको अपने कार्य पर पूरा ध्यान देना होगा। अचानक से धन हानि और धन प्राप्ति के योग बनेंगे। ससुराल पक्ष से संबंध बेहतर होंगे। संतान पर ध्यान देने की आवश्यकता होगी। यदि आप किसी प्रेम संबंध में हैं तो उसमें परेशानी आ सकती है।

शनि का अन्य विभिन्न भावों में गोचर का प्रभाव

तृतीय भावः साहस में वृद्धि, धन लाभ, यात्राएं।
पंचम भावः शिक्षा में व्यवधान, संतान को कष्ट, प्रेम संबंधों में परेशानी।
षष्ठम भावः शत्रुओं पर विजय, कार्य क्षेत्र में उन्नति, कंपटीशन में सफलता।
सप्तम भावः दांपत्य जीवन में तनाव, शारीरिक कष्ट, मानसिक तनाव।
नवम भावः सुदूर यात्राएं, कार्यस्थल पर ट्रांसफर, धार्मिक अथवा सामाजिक कार्य।
दशम भावः कार्यक्षेत्र में उन्नति, सरकार से लाभ, परिवार से दूरी।
एकादश भावः विभिन्न प्रकार के लाभ, राजनीति में सफलता, सुखों की प्राप्ति

शनि दशा फल

शनि की महादशा (25/ 1/2051-25/ 1/2070)

जिस प्रकार जीवन में शनि की साढ़ेसाती अथवा पनौती का विशेष ध्यान रखना चाहिए उसी प्रकार आपकी कुंडली में उपस्थित शनि की महादशा अथवा अंतर्दशा आपको काफी हद तक प्रभावित कर सकते हैं। क्योंकि यह कैसा समय है जिस दौरान शनि अपना पूर्ण प्रभाव आपके जीवन पर दिखाता है। तो आइए जानते हैं क्या होगा शनि की महादशा में विभिन्न ग्रहों की अंतर्दशाओं का आपके जीवन पर प्रभावः

शनि अंतर्दशा (25/ 1/2051-28/ 1/2054)

शनि की महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष और 3 दिन की होगी। शनि देव को परम दण्डाधिकारी कहा गया है। वे मनुष्य को उसके अच्छे और बुरे कर्म का फल देते हैं। शनि स्वभाव से न्याय और अनुशासन प्रिय है। शनि अनुशासन, बुढ़ापा, जिम्मेदारी, दीर्घायु, सेवक, सहयोगी, अलगाव, आध्यातमिकता और गहराई आदि का कारक होता है। शनि वायु तत्व का ग्रह है।

इस अवधि में परिजन या प्रियजन से विवाद हो सकता है। पारिवारिक जीवन से अलगाव भी हो सकता है। स्वास्थ्य कमजोर रहने की संभावना है। स्वभाव में अहंकार और ईर्ष्या की भावना बढ़ सकती है। इस दौरान मन में निराशा का भाव भी रह सकता है, प्रियजनों से सहयोग नहीं मिलेगा। साथ ही सरकारी विभाग या उच्च अधिकारी आपके पक्ष में नहीं रहेंगे। छोटे–मोटे विवाद और बेचौनी आपके लिए कष्टकारी हो सकती है। सांसारिक जीवन से मोहभंग हो सकता है। आशा के अनुरूप परिणाम नहीं मिलेंगे। इस समय अवधि में आप एकांत में रहकर चंतन–मनन करना अधिक पसंद करेंगे। कार्य क्षेत्र में आपको अत्याधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

बुध अंतर्दशा (28/ 1/2054-7/10/2056)

शनि की महादशा में बुध की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष, 8 माह और 9 दिन की होगी। शनि और बुध परस्पर अच्छे संबंध रखते हैं इसलिए इस दशा की समय अवधि में आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा व आपको प्रसिद्धि मिलेगी। आपको कई प्रकार के लाभ प्राप्त होंगे और जीवन में खुशहाली बनी रहेगी। धार्मिक कार्यों के प्रति आपका झुकाव बढ़ेगा। आपके संयमित व्यवहार से लोग प्रभावित होंगे। व्यवसाय में लाभ और कृषि भूमि खरीदने की संभावना बन रही है। इसके अलावा आप कोई नया व्यवसाय भी शुरू कर सकते हैं।

इसके अलावा यदि विवाहित हैं तो जीवन साथी और बच्चों की ओर से सुख मिलेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी और आपको समाज में नई पहचान मिलेगी। विद्वान और बुद्धिजीवी व्यक्ति आपकी प्रशंसा करेंगे और उनके माध्यम से आपको लाभ प्राप्त होगा। शरीर में कफ संबंधी विकार से परेशानी हो सकती है।

केतु अंतर्दशा (7/10/2056-16/11/2057)

शनि की महादशा में केतु की अंतर्दशा लगभग 1 वर्ष 1 माह और 9 दिन की होगी। शनि और केतु क्रूर ग्रह हैं हालांकि दोनों ही परस्पर अच्छा भाव नहीं रखते हैं इसलिए इस दशा की अवधि में आपको मंद या अशुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

इस अवधि में बुरे लोगों के साथ आपका विवाद हो सकता है। आपका अनुभव दुखद रह सकता है। इस वजह से मानसिक तनाव और असथिरता बढ़ेगी। आध्यातमिक क्रियाकलापों के लिए यह समय बहुत अच्छा होगा। इस अवधि में धर्म और अध्यात्म को लेकर आपके मन में एकाग्रता बढ़ेगी। इस दशा अवधि में प्रियजन या प्रियजन से अलगाव होने की संभावना है।

इसके अलावा आपके स्वास्थ्य में गिरावट देखने को मिल सकती है। आप वात और पित्त संबंधित विकारों से परेशान रह सकते हैं। यदि आप विवाहित हैं तो इस समय अवधि में जीवन साथी या बच्चों से अलग हो सकते हैं या आप किसी महत्वपूर्ण कार्य के चलते उनसे दूर जा सकते हैं।

शुक्र अंतर्दशा (16/11/2057-16/ 1/2061)
शनि की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा लगभग 3 वर्ष 2 माह की होगी। शनि और शुक्र परस्पर मित्रता का भाव रखते हैं। शनि स्वभाव से क्रूर ग्रह है जबकि शुक्र शुभ ग्रह है इसलिए इस दशा अवधि में शनि और शुक्र के संयोग से आपको मिश्रित व अलग तरह के परिणामों की प्रापति होगी।

इस अवधि में आप जीवन के बेहतर क्षणों का आनंद लेंगे। जीवन साथी या बच्चों से सुख मिलेगा। यदि अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। यदि विवाहित हैं और संतान की इच्छा रखते हैं तो इस अवधि में आपको संतान की प्रापति हो सकती है। कृषि कार्य से लाभ की संभावना है। यदि आप राजनीति में सक्रिय हैं तो आपको भारी जन समर्थन मिलने की संभावना है।

इसके अलावा आपके प्रति बच्चों का लगाव व स्नेह और बढ़ेगा। कार्य स्थल पर आपको कोई उच्च पद की प्रापति हो सकती है या आप किसी संगठन के मुखिया बन सकते हैं। भाग्य का साथ मिलेगा और प्रसिद्धि मिलेगी। आप अपने विरोधियों पर हावी रहेंगे।

सूर्य अंतर्दशा (16/ 1/2061-28/12/2061)
शनि की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा लगभग 11 माह और 12 दिन की होगी। वैदिक ज्योतिष के अनुसार शनि देव सूर्य देव के पुत्र हैं लेकिन दोनों पिता–पुत्र परस्पर शत्रुता का भाव रखते हैं। इसलिए इस दशा अवधि में आपको मंद परिणाम प्राप्त होंगे।

इस अवधि में आपके जीवन साथी और बच्चों को कष्ट उठाना पड़ सकता है, साथ ही भाई–बहन के साथ आपके मतभेद हो सकते हैं। स्वास्थ्य थोड़ा कमजोर रहने की संभावना है, कुछ रोगों से परेशानी हो सकती है। आप पर कोई झूठा आरोप लगा सकता है। इस अवधि में आप कड़ी मेहनत करेंगे लेकिन परिणाम इच्छा के अनुरूप प्राप्त नहीं होंगे।

इसके अलावा धन हानि की संभावना भी बन रही है। विरोधी आपके विरुद्ध आवाज उठा सकते हैं। मानसिक तनाव बढ़ेगा। किसी न्यायिक मामले में आपको सजा मिल सकती है। इस दौरान चोरी की भी संभावना है। आप नेत्र और पेट से जुड़ी बीमारी से पीडति रह सकते हैं। प्राणायाम करना आपके लिए लाभकारी रहेगा। किसी भी तरह के विवाद और न्यायिक मामले में पड़ने से बचें। क्योंकि इससे आपकी छवि को नुकसान पहुंच सकता है। इसके अतिरिक्त अनैतिक कार्यों से दूर रहें।

चंद्र अंतर्दशा (28/12/2061-28/ 7/2063)
शनि की महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 माह की होगी। शनि और चंद्रमा परस्पर मित्रता का भाव नहीं रखते हैं। शनि एक क्रूर ग्रह है जबकि चंद्रमा मन का कारक है इसलिए इस दशा की अवधि में विभिन्न

कार्यों के परिणाम आपके पक्ष में रहने की संभावना कम है।

इस अवधि में जीवन साथी से मतभेद हो सकते हैं। ऐसी संभावना भी है कि रिश्तों में कड़वाहट बढ़ने से आप जीवन साथी से अलग हो सकते हैं। इसके अलावा आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य भी प्रभावित रह सकता है। पड़ोसी और परिजनों से विरोध बढ़ सकता है। प्रियजन और महिलाओं से विवाद की संभावना है जो आपके पारिवारिक जीवन को चोट पहुंचा सकता है।

इसके अलावा जीवन में खुशियों का अभाव रहेगा। मानसिक तनाव की वजह से बेचौनी बढ़ेगी और आप अलगाव महसूस करेंगे। आप कुछ समय के लिए एकांत में रहना पसंद करेंगे। स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है, वायु विकार से संबंधित परेशानी हो सकती है। एकाग्रता बढ़ाने के लिए प्राणायाम करना लाभकारी रहेगा। इस अवधि में अच्छी बात यह है कि, आपको धन की प्रापति होगी और आय में बढ़ोतरी होगी।

मंगल अंतर्दशा (28/ 7/2063-7/ 9/2064)
शनि की महादशा में मंगल की अंतर्दशा लगभग 1 वर्ष, 1 माह और 9 दिन की होगी। शनि और मंगल क्रूर ग्रह हैं और दोनों परस्पर शत्रुता का भाव रखते हैं इसलिए इस दशा अवधि में आपके सामने कई चुनौतियां खड़ी हो सकती हैं, जिनका आपको साहस के साथ सामना करना होगा।

इस अवधि में स्वास्थ्य संबंधी परेशानी हो सकती है। बुखार, चोट या दुर्घटना की संभावना है। इस दौरान वाहन सावधानी से चलाएं और लापरवाही बिल्कुल ना बरतें। बेवजह विवाद करने से बचने की कोशिश करें, क्योंकि यह आपके लिए कष्टकारी हो सकता है। कार्य क्षेत्र में गिरावट देखने को मिल सकती है या फिर कार्य स्थल पर आप किसी साजिश के शिकार हो सकते हैं। इस अवधि में आप अपने पैतृक निवास पर लौट सकते हैं। चोरी और आग जनित हथियार व उपकरणों से हानि की संभावना है।

इसके अलावा आप अपने परिवार विशेषकर जीवन साथी और बच्चों से दूर रह सकते हैं। भाई और मित्रों के साथ मतभेद भूलकर उनके साथ अच्छे संबंध बनाएं। ऐसा कोई भी कार्य करने से बचें, जिसकी वजह से समाज में आपकी बदनामी हो। अच्छा जीवन जीने के लिए क्रोध पर नियंत्रण रखें और बेवजह परेशान ना हों।

राहु अंतर्दशा (7/ 9/2064-13/ 7/2067)
शनि की महादशा में राहु की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष 10 माह और 6 दिन की होगी। शनि और राहु क्रूर ग्रह हैं और दोनों परस्पर अच्छे संबंध नहीं रखते हैं। इसलिए इस दशा में आपको सामान्यतः मंद परिणाम मिलेंगे लेकिन कुछ परिस्थितियों में अप्रत्याशित परिणाम मिलने की भी संभावना है।

इस अवधि में कोई पुरानी या पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही बीमारी आपको परेशान कर सकती है, इसलिए अपने स्वास्थ्य पर नियमित रूप से ध्यान दें। आर्थिक नुकसान की भी आशंका है। इस दशा अवधि में चोरी और लूटपाट का भय भी रह सकता है।

इसके अलावा इस अवधि में आप दुर्घटना के शिकार भी हो सकते हैं इसलिए सावधान रहें। आप बुखार, जोड़ों के दर्द और गैस से संबंधित विकारों से परेशान रह सकते हैं। विरोधी आपकी छवि को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। मानसिक तनाव बढ़ेगा लेकिन सकारात्मक सोच आपको जीवन में आगे लेकर जाएगी।

बृहस्पति अंतर्दशा (13/ 7/2067-25/ 1/2070)
शनि की महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा लगभग 2 वर्ष 6 माह और 12 दिन की होगी। बृहस्पति शुभ ग्रह है जबकि शनि एक क्रूर ग्रह है। दोनों ग्रह परस्पर तटस्थ संबंध रखते हैं इसलिए इस दशा की अवधि में आपको जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मिश्रित परिणाम प्राप्त होंगे।

इस अवधि में धार्मिक और आध्यातमिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। आप तीर्थ यात्रा पर जाएंगे और वहां आपकी मुलाकात धार्मिक और विद्वान लोगों से होगी। आपके मन में सामाजिक सेवा का भाव आएगा और आप दूसरों की मदद करेंगे। पारिवारिक जीवन में सद्भाव बना रहेगा और शारीरिक सुख की प्राप्ति होगी। आप सफलता को प्राप्त करेंगे। आपके वरिष्ठ सहकर्मी इस सफलता की बड़ी वजह बनेंगे।

इसके अलावा आपके परिवार का आकार बढ़ेगा और सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कई लोग आपसे सलाह लेने आएंगे। कार्य स्थल पर प्रोन्नति मिल सकती है। कड़ी मेहनत और अच्छे काम करने से आपको नाम और प्रसिद्धि मिलेगी।

उपाय

शनि के क्रोध से बचने तथा कृपा प्राप्ति के उपाय–

यदि आपको लगता है कि शनि देव आपसे क्रोधित हैं अथवा आपको शनि की साढ़ेसाती, पनौती अथवा शनि दशा के दौरान प्रतिकूल परिणाम प्राप्त हो रहे हैं तो आप शनि ग्रह से संबंधित दान कर सकते हैं। इसके विपरीत यदि शनिदेव की कृपा आपको प्राप्त हो रही है और आप चाहते हैं कि उनकी कृपा आप पर सदैव बनी रहे तो नीचे दिए गए उपायों में से शनिदेव को प्रसन्न करने का कोई भी उपाय आप कर सकते हैं:

शनि मंत्रों का जाप

आप निम्न में से किसी भी मंत्र का जाप अपनी श्रद्धा अनुसार कर सकते हैं:

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम।
छाया मार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।

शनि यंत्र की पूजा

• शनिवार के दिन अथवा शनि के नक्षत्र (पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद) अथवा शनि की होरा में " शनि यंत्र" शनि मंत्र का जाप करते हुए धारण करें।

शनि संबंधित दान

• आप साबुत उड़द, लोहा अथवा लोहे से बने बर्तन, सरसों अथवा तिल का तेल, काले तिल, कालेरंग का कपड़ा, मड़े के जूते, काला सुरमा, काले चने, महिष, नीलम रत्न आदि वस्तुओं का दान कर सकते हैं।
• आप शनिवार के दिन सरसों के तेल का छाया पात्र भी दान कर सकते हैं।

शनि संबंधित रुद्राक्ष

• आप 4 मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं। इस रुद्राक्ष को धारण करने से पूर्व इन मंत्रों का जाप अवश्य करें:

ऊँ ह्रीं नमः।

ऊँ वं कं थं हं।

शनि संबंधित जड़ी

• आप शमी वृक्ष लगाएं तथा नियमित रूप से उसकी पूजा करें।
• इसके अतिरिक्त आप बिच्छू चढ़ अथवा धतूरे की जड़ भी धारण कर सकते हैं।

शनि संबंधित रत्न

• किसी जानकार ज्योतिषी की सलाह लेकर उत्तम गुणवत्ता का नीलम रत्न पंचधातु की अंगूठी में शनिवार के दिन मध्यमा उंगली में धारण करें।
• इसके अतिरिक्त आप कटहैला, जमुनिया अथवा नीली रत्न भी धारण कर सकते हैं।
• यदि आप चाहें तो आप घोड़े की नाल अथवा नाव की कील का छल्ला भी मध्यमा उंगली में पहन सकते हैं।

अन्य उपाय

• अंडा अथवा मांस भक्षण तथा मदिरा पान ना करें और व्यसनों से दूर रहें।

• रात्रि काल में दूध का सेवन ना करें।

• भगवान श्री हरि विष्णु के कूर्म अवतार स्वरूप की पूजा करें।

• शनिवार के दिन व्रत रखें और दिन में केवल एक बार भोजन करें। भोजन में उड़द की दाल अवश्य हो।

• महाराज दशरथ कृत नील शनि स्तोत्र का पाठ करें।

• शनि चालीसा का पाठ करें।

• हनुमान चालीसा का पाठ करें।

• काला सुरमा, नागर मोथा, काले तिल व सौंफ को जल में मिलाकर स्नान करना चाहिए।

• शनिवार के दिन संध्या काल में पीपल वृक्ष के नीचे तेल का दीपक जलाएं।

• पीपल वृक्ष की सात परिक्रमा करें।

• नारियल अथवा बदाम शनिवार के दिन जल में प्रवाहित करें।

• उड़द की दाल की जलेबी या कचौड़ी बनाकर दरिद्र अथवा दिव्यांगजन में वितरित करें।

• यदि आपकी कुंडली में शनि वक्री अवस्था में स्थित है तो चप्पल पहन कर ही स्नान करें।

• काले तिल के लड्डू बनाकर छोटे बालकों को अथवा गौ माता को खिलाएं।

• काली उड़द के बड़े बनाकर कुत्ते को खिलाएं।

• शनि अमावस्या को हवन कराएं।

• भगवान शिव की नियमित उपासना करें और शिवलिंग पर जल चढ़ाएं।